ओ३म्

सत्यापन क्रमांक :
RAJHIN/2015/60530

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ६ अंक : ११ १ नवम्बर २०२३ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

स्वामी जी ने पूछा कि कौन सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है? किसी ने उत्तर दिया कि कृणपक्ष का अंत और शुक्लपक्ष का आदि अमावस मंगलवार है। यह सुन कर कोठे की छत और दीवारों की ओर दृष्टि की। फिर प्रथम वेद मंत्र पढ़े, तत्पश्चात् संस्कृत में ईश्वर की उपासना की, फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष सहित गायत्री मंत्र का पाठ करने लगे और गायत्री मंत्र के पाठ के पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त सहित कुछ समय तक समाधियुक्त रह नयन खोल यों कहने लगे कि 'हे दयामय, हे सर्वशक्ति- मान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है! तेरी यही इच्छा है! तेरी इच्छा पूर्ण हो! आहा! तैनें अच्छी लीला की!' बस, इतना कह स्वामी जी महाराज ने, जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वांस को रोक एक साथ ही बाहर निकाल दिया! उस विक्रम का संवत १९४० की कार्तिक अमावस दीपावली के दिन की संध्या के ६ बजे थे! -: आर्यमुसाफिर द्वारा संकलित जीवनी से।

गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस मिति मार्गशीर्ष कृ० ८ संवत् १७३२ विक्रमी 11.11.1675

जिस देश और धर्म के पीछे इन बलिदानियों ने अपने प्राण त्याग दिये, वे हमें भी प्रिय हौने ही चाहिये! अन्यथा हमें विचार करना चाहिए कि हम मानव भी है या नही!

महारानी लक्ष्मीबाई जयन्ती कार्तिक शुक्ल १३ संवत् १८८५ विक्रमी 19.11.1828 ईस्वी

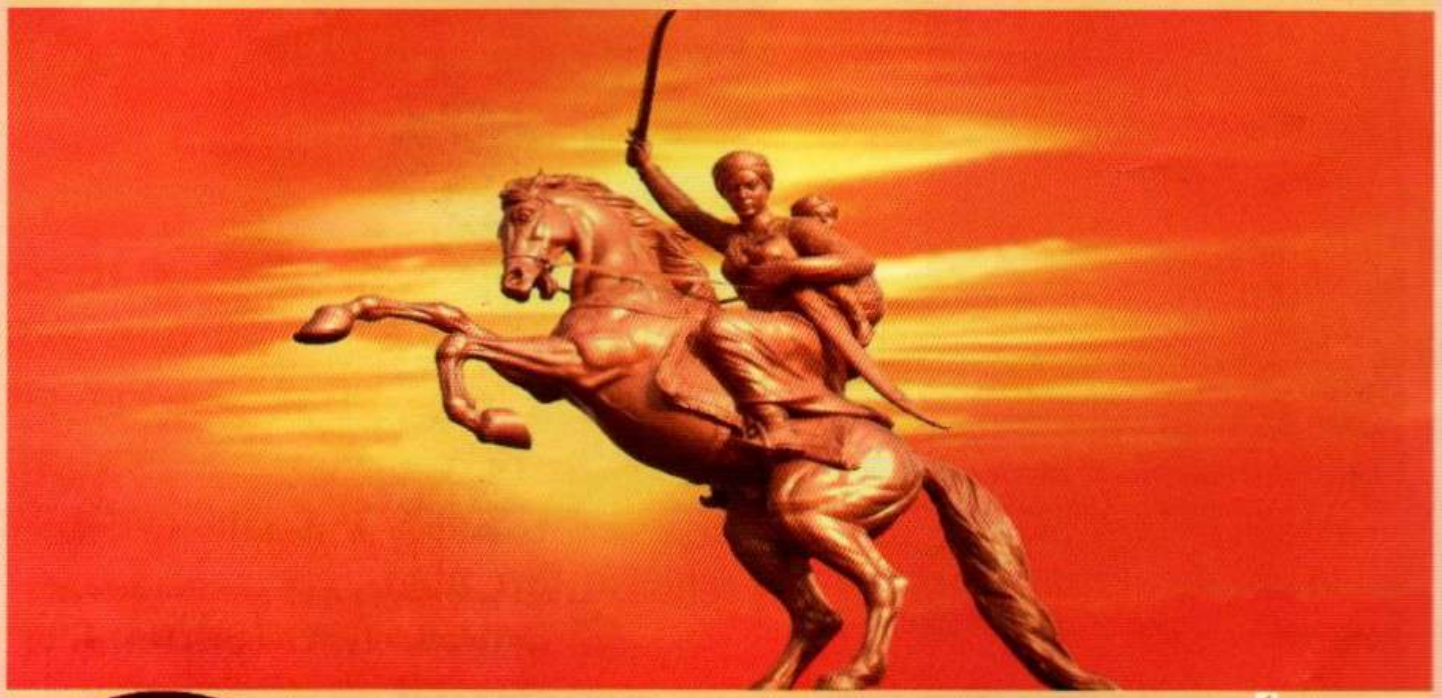

ओ३म

देश धर्म पर जिनने वारे प्राण, त्याग निज ममता मोह।
उनको मात्र याद करना है, थोथी रीति, उसे दे छोड़।
तनमनधन, निजजीवन, परिजन देशधर्महित दे तू छोड़।
परंपरा कायम रख उनकी, तभी सत्य-जय उनकी होय।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ६ अंक : ११

दयानन्दाब्द : -१९९

विक्रमसंवत् : माह-कार्तिक २०८०

कलि संवत् ५१२४

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,१२४

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक : 0291-2516655

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय	४
२.	वेद-वचन	६
३.	अमति, दुग्रति और पाप...	८
४.	महर्षि जीवन...	९
५.	धर्म सुधा सार...	१६
६.	सम्मेलन.....	२६

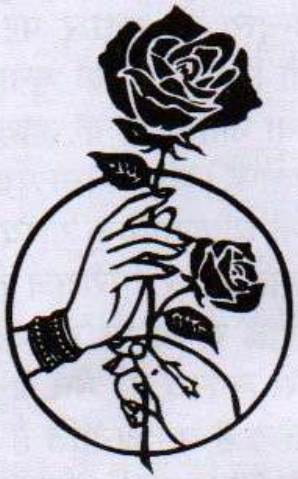

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

सम्पादकीय

चुनावी दर्पण में दीखता देश व समाज

पॉच राज्यों में चुनाव आते ही देश व समाज की स्थिति स्पष्ट दिखायी दे रही है। कार्य के स्थान पर प्रचार ही प्रमुख है। राजस्थान के समाचारपत्रों में एक दिन के एक अखबार में चार चार पॉच पृष्ठ राज्य के मुख्यमंत्रियों की फोटो के साथ योजनाओं के बखान करते मिलते हैं। ये विज्ञापन मात्र राजस्थान के ही नहीं, पड़ौसी राज्यों के भी होते हैं। ऐसे ही विज्ञापन असंख्य टीवी चैनलों पर भी आते हैं। जिन योजनाओं का बखान ये विज्ञापन करते हैं, उन में इन विज्ञापनों के लिए व्यय की धनराशि जोड़ दी जायं तो उन योजनाओ का लाभ कितना बढ़ जायेगा या उनकी क्रियान्विति कितनी सहज हो जाएगी! आज से बीस वर्ष पहले ये विज्ञापन न थे तो क्या प्रजा को कोई लाभ होता ही नहीं था? किन्तु कार्य न होने पर भी प्रचार, वह भी पराए राज्यों में जनता को मूर्ख तो बना ही सकता है।

आजकल मोदीजी सरकारी नौकरियों के नियुक्तिपत्र बॉटते हैं। किन्तु विभिन्न सरकारी कार्यालयों में २०१४ में और वर्तमान में स्वीकृत पदों की संख्या के ऑकड़ें भी अखबारों के चार पृष्ठों और टीवी चैनल पर दे देवें तो बेरोजगार युवक सच्चाई जान लेंगे अब कार्पोरेट गवर्नेंस है वेलफेयर स्टेट नहीं है।

ऐसे ही अखबारों के पृष्ठ भरे हुए देखे है ब्राह्मण समाज के, राजपूत समाज के, दाधीच समाज के, और भी जन्मना जातियों के। मेरी ऑखें तरस गयी हिन्दू समाज का एक विज्ञापन देखने के लिए। किन्तु हिन्दुत्व के नाम पर हिन्दुओं में कुछ भी नहीं होने का तथ्य एक कटु सत्य है। नहीं मानने वाले क्या बताएंगे कि हिन्दुओं में रोटी बेटी का संबंध (जो समाज को जोड़ने का मजबूत साधन है) हिन्दुत्व के आधार पर होता है या जन्मना जाति के आधार पर? कौनसी राजनेतिक पार्टी है जो विद्यार्थियों के चुनाव, वार्ड पंच या पार्षदों के चुनाव से लेकर सांसद के चुनाव में टिकट जन्मना जातिवाद के आधार पर नहीं देते। जनप्रतिनिधियों का चुनाव प्रजा का भला करने के लिए होता है। भला बिना पद के भी किया जा सकता है। राजनीति में कदम रखने वाले बिना पद के अपनी व्यावसायिक योग्यतानुसार न सही, एक जिम्मेवार नागरिक के रूप में भी सरकारी कार्यों का धरातल पर निरीक्षण तो कर ही सकते है। एक अनपढ़ व्यक्ति अपने लिए मकान का निर्माण कराते समय भी गुणवत्ता का ध्यान तो रख ही लेता है। फिर टिकट नहीं मिलने पर बगावत किस लालच में? मैंने अनुचित शब्द का प्रयोग नहीं किया है। सीधी बात यह है कि जिसे राजनीति कहते हैं वह अनीति है। पुनः हिन्दुत्व पर! एक राज्य में भाजपा ने अपने एक घोषित उम्मीदवार का टिकट इसलिए काटकर अन्य को दे दिया कि वह मुस्लिम है, जबकि वह घोषित कर रहा है कि वह मुस्लिम नहीं है। ऐसा लगता है कि महर्षि के पूर्व हिन्दुओं की खेती विधर्मियों द्वारा काटने की परिस्थिति वाला हिन्दू समाज अधिक पनप रहा है।

स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज की मानें तो आर्यसमाज में राजनीति लाने के स्थान पर आर्यसमाजियों का निर्माण कर राजनैतिक पार्टियों में भेजकर ही भविष्य के प्रति निश्चिंत हो सकते हैं। नान्यथा।

अरब में असहिष्णुता अनदेखी नहीं

गत सात अक्टूबर को हमास ने जो किया, उसका अनुभव भारत आठवीं शताब्दी से करता आया है। बच्चे का क़लेजा बंदाबहादुर को खिलाना और उसका मांस गर्म चिमटे से नौंचना, गुरुपुत्रों को जीवित दीवार में चुनवाना, गुरु अर्जुनदेव को जलते तवे पर बिठाकर मारना, गुरु तेगबहादुर का शीश काटना, नवजात बच्चों को ऊँचा उछालकर भाले पर लेना, गर्भस्थ की हत्या। नवम्बर माह के यही दिन स्मरण कराते है भाई दयाला को पानी में उबालना, भाई मतिदास को आरे से चिरवाना, भाई सतिदास को रुई में लपेटकर जलाना। दो कंटीले अंकुश लगे पहियों के बीच पीसना, अबलाओं की छातियॉ काटंना सहित कितने बलात्कार, दासत्व और हत्याएँ भारत ने झेली है। कारण?वही जो सात अक्टूबर को हमास के हमले के पीछे था। घोर असहिष्णुता, अमानवीयता और जंगली बर्बरता।

ऐसे ही बर्बर दृश्य धीरे धीरे सामने आ रहे हैं। कोई मनुष्य ऐसा कैसे कर सकता है?किन्तु एक दो नहीं हजारों और लाखों की संख्या में सनकी हत्यारे! ऐसे मुस्लिम राष्ट्र जिनकी धरा पर ये आतंकी हजारों की संख्या में हर प्रकार से पनपते हैं लेकिन उस धरा के मालिक कहलाने वाले राष्ट्र उनके कृत्यों के जिम्मेदार नहीं। फिलिस्तीन में हमास, लेबनान में हिज़बुल्ला की तरह यमन, ईरान, ईराक, नाईजीरिया और रूस तक के इस्लामी आतंकी इस्राइल के विरुद्ध लामबंद हो रहे हैं। ये आतंकी ऐसे ऐसे हथियारों और साधनों से लैस है जो कई राष्ट्रों के पास नही है। छोटी मोटी आतंकी घटना के मामले में राष्ट्रों के बीच प्रत्यर्पण संधि होती है। किन्तु एक राष्ट्रके विरुद्ध युद्ध छेड़ देने वाले आतंकी आपकी जनता को अपनी ढाल बनाकर आक्रमण कर रहे हैं और आप इसे अपने पर हमला बताते हैं।इनको अपनी जमीन पर पनपने देने वाले राष्ट्र हैं या प्रतिराष्ट्र?

जिन देशों ने हमास के सात अक्टूबर के हमले पर जश्न मनाया, वे आज इस्राइल के हमले को रोकने की मांग कर रहे हैं। इस्राइल तो हमला करने से पहले अपने लक्ष्य बताए और वे स्थान खाली करने की चेतावनी देने का कार्य प्रथम दिन से आज तक कर रहा है। यह सच है कि वे लक्ष्य नागरिक ठिकाने हैं। किन्तु यह कटु सत्य है कि उन नागरिक ठिकानों को आतंकी सामरिक कार्य में ले रहे हैं। गाजा के कुछ क्षेत्रों पर इस्राइल के अधिकार के बाद अब तो इसके प्रमाण भी सामने आ गए हैं।

इस्राइल के विरुद्ध युद्ध में हमास के पीछे खड़े राष्ट्र फिलीस्तीनी शरणार्थियों को लेने को तैयार नहीं है। हमास के आतंकी उन्हें अपनी मानवीय ढाल बनाकर मात्र इस्राइल को बदनाम करने के लिए बलि दे रहे हैं। हमास की सुरंगे आबादी के नीचे हैं। यह कैसी वीरता है?क्या इस्लाम के नाम पर आतंक मचाने वालों को अब अल्लाह पर भरोसा नहीं रह गया है। मुस्लिम उलेमाओं को दुनिया के मुसलमानों को बताना चाहिए कि इस्लाम के लिए लड़ने वाले हमास के पक्ष में दुनिया के मुसलमानों को बोलने की नौबत क्यों आई? स्वयं अल्लाह इस्राइलियों की बुद्धि को क्यों नहीं फेर रहा है और एक गैर इस्लामी मुल्क की सेना अल्लाह की मर्जी के विरुद्ध हमास व हमास के रक्षक फिलिस्तीनियों को मारने में कामयाब क्यों हो रही है? प्रथम अरब इस्राइल युद्ध से आज तक क्या अल्लाह इस्राइल के विरुद्ध और मुसलमाने के पक्ष में नहीं रहा है?—कमल।

वेद-वचन

उद्योगी की प्रशंसा

यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैरर्केभिः सूनो सहसो दहाशत् ।
स मर्त्येष्वमृत प्रचेत राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति ।। -६।५।५।।

पदार्थः- हे **(सहसः)** बलवान् के **(सूनो)** पुत्र और **(अमृत)** मरण-धर्म से रहित ! **(यः)** जो **(यज्ञेन)** विद्वानों के सत्कार नामक यज्ञ और **(समिधा)** सत्य के प्रकाशक या ईधन से तथा **(यः)** जो **(अर्केभिः)** आदर करने योग्य और **(उक्थैः)** कहने के योग्य पदार्थों से **(ते)** आपके लिए **(ददाशत्)** देता है **(सः)** वह **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(प्रचेताः)** उत्तम ज्ञानवान् **(राया)** धन **(द्युम्नेन)** यश और **(श्रवशा)** अन्न वा श्रवण से **(वि, भाति)** प्रकाशित होता है, इस प्रकार विशेष करके जानो ।

भावार्थः- जो प्रशंसित कर्म और गुणों से सहित जन इस संसार में प्रयत्न करते हैं, वे विद्या, यश और धन से युक्त होकर संसार में प्रसिद्ध होते हैं ।

अध्यापक-उपदेशक के कर्तव्य

अप्नस्वतीमश्विनावाचमस्मे कृतं नो दस्त्रा वृषणा मनीषाम् ।
अद्यूत्येऽवसे निह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ ।। -३४।२९।।

पदार्थः- हे **(दस्रा)** दुःख के नाशक ! **(वृषणा)** सुख के वर्षानेवाले **(अश्विना)** सब विद्याओं में व्याप्त अध्यापक और उपदेशक लोगो ! तुम दोनों **(अस्मे)** हमारी **(वाचम्)** वाणी **(च)** और **(मनीषाम्)** बुद्धि को **(अप्नस्वतीम्)** प्रशस्त कर्मोवाली **(कृतम्)** करो । **(नः)** हमें **(अद्यूत्ये)** द्यूत-रहित स्थान में हुए कर्म में **(अवसे)** रक्षा के लिए स्थित करो । **(वाजसातौ)** धन का विभाग करनेहारे संग्राम में **(नः)** हमारी **(वृधे)** वृद्धि के लिए **(भवतम्)** उद्यत होओ । जिन **(वाम्)** तुम्हारी **(नि, ह्वये)** निरन्तर स्तुति करता हूँ, वे आप दोनों मेरी उन्नति करो ।

भावार्थः- जो मनुष्य निष्कपट, आप्त दयालु विद्वानों का निरन्तर सेवन करते हैं वे प्रगल्भ, धार्मिक विद्वान् होके सब ओर से बढ़ते और विजयी होते हुए सबके लिए सुखदायी होते हैं ।

यज्ञानुष्ठान से स्त्री और सन्तान-प्राप्ति

ायन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः ।

सरस्वन्तं हवामेहे ।। -१४६०।।

पदार्थः-(जनीयन्तः) जीवन मार्ग में उदात्तता के लिए स्त्री चाहते हुए **(पुत्रीयन्तः)** यज्ञादि परापकारादि की परम्परा को आगे बढ़ाने वाले पुत्र-पुत्री चाहते हुए **(सुदानवः)** यज्ञादि परोपकार करनेवाले **(अग्रवः)** उपासक हम **(नु)** आज **(सरस्वन्तम्)** सर्वज्ञ परमात्मा को **(हवामहे)** पुकारते हैं।

भावार्थः- यज्ञादि परोपकार करने वालों को परमात्मा की यज्ञानुष्ठान-जनित कृपा से स्त्री, पुत्र आदि सब ऐश्वर्य, सुख-भोग, सम्पत्ति प्राप्त होती है ।

२. पदार्थः- (जनीयन्तः) हम उपासक मुमुक्षुजनों की शक्तियों को चाहते हुए जिनमें मुमुक्षु बनते हैं (पुत्रीयन्तः) अध्यात्मवरों को चाहते हुए जो मुमुक्षुओं को अभीष्ट होते हैं (अग्रवः) आगे बढ़ने वाले (सुदानवः) शोभनदान-आत्मदान-आत्मसमर्पण करने वाले (सरस्वन्तं हवामहे) वेदवाणी वाले परमात्मा को आमंत्रित करते हैं।

भावार्थः- यज्ञ परोपकारादि करने वाले मुमुक्षु उपासक प्रभु से मुमुक्षु बनाने का सामर्थ्य और उस कृपा के लिए जिनसे यज्ञ परोपकारादि करने वाले मुमुक्षु बनने की परम्परा चलती रहे-परमात्मा को पुकारते हैं।

वेद मानव-हितकारी

सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा उवास मनवे स्वऽर्वती ।

यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जीजनन् ।। -१८।१।२०।।

पदार्थः-(सो) वही **(चित्)** निश्चय करके **(नु)** अब **(भद्रा)** कल्याणी **(क्षुमती)** अन्नवाली **(यशस्वती)** यशवाली **(स्वर्ततती)** बड़े सुखवाली वेदवाणी **(उषा)** प्रभातवेला के समान **(मनवे)** मनुष्य के लिए **(उवास)** प्रकाशमान् हुई है, **(यत्)** जिससे कि **(ईम्)** इस वेदवाणी को **(उशन्तम्)** चाहनेवाले **(होतारम्)** दानी **(अग्निम्)** विद्वान् पुरुष को **(उशतम्)** अभिलाषी पुरुषों की **(क्रतुम् अनु)** बुद्धि के साथ **(विदथाय)** ज्ञान-समाज के लिए **(जीजनन्)** उन्होंने-विद्वानोंने उत्पन्न किया है।

भावार्थः- परमात्मा ने मनुष्य के कल्याण के लिए वेदवाणी को सूर्य के प्रकाश के समान संसार में प्रकट किया है । जो मनुष्य वेदज्ञाता महाविद्वान् होवे, लोग उसको मुखिया बनाकर समाज का सुख बढ़ावें ।

अमति, दुर्मति और पाप दूर हों

– डॉ.रामनाथ वेदालंकार

आरे अस्मद् अमतिम् आरे अंहः, य आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने, यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति ।।

ऋषिः **वामदेवः** । देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

- **(सहसः सूनो)** हे बल के पुत्र **(अग्ने)** तेजस्वी परमात्मन् ! **(यत्)** क्योंकि [तू] **(निपासि)** रक्षा करता है, [अतः] **(अस्मत्)** हमसे **(अमतिं)** अमति को **(आरे)** दूर [कर] (अहंः) पाप को **(आरे)** दूर कर **(विश्वा)** समस्त **(दुर्मतिं)** दुर्मति को **(आरे)** दूर कर। [तू] **(दोषा)** तमोमयी रात्रि में **(शिवः)** कल्याणकर [होता है]। **(देवः)** देव [तू] **(यं चित्)** जिसको भी **(आ सचसे)** प्राप्त हो जाता है [उसका] **(स्वस्ति)** कल्याण [कर देता है]।

हे मेरे परमात्मन् ! तुम बल के पुत्र हो । जिसमें जिस गुण का अतिशय बताना अभिप्रेत होता है, उसे उसका पुत्र कहने की वेद की शैली है । अपनी बोलचाल की भाषा में भी हम पुत्र को पुतला के रूप में परिवर्तित कर इस मुहावरे का प्रयोग करते हुए कहते हैं कि वह बल का पुतला है । अतः आशय यह है कि तुम अतिशय बलवान् हो)। बली होने के कारण ही तुम सबके रक्षक भी बने हुए हो। जो बलवान् और रक्षा करने में समर्थ है वही निर्बल और अरक्षित की याचना को पूर्ण कर सकता है । अतः हम विनीतभाव से तुमसे प्रार्थना करते हैं कि तुम हमारे अन्दर से अमति, दुर्मति और पाप को दूर कर दो । जब तक हम मतिहीन हैं, तब तक कुछ भी साधन नहीं जुटा सकते, हम पराधीन बने रहेंगे। अमति दूर भी हो जाए, पर उसके स्थान पर दुर्मति या कुमति आ जाये, तब तो हम और भी अधिक हतभाग्य हो जायेंगे, क्योंकि कुमति तो मार्गच्युत करने वाली है । दुर्मति पाकर तो हम भ्रष्टाचार में ही संलग्न होंगे, जिससे न केवल हमारा किन्तु अन्यों का भी अकल्याण ही होगा । अतः हम दुर्मति से भी दूर ही रहना चाहते हैं । साथ ही जिन पाप कर्मों को करने के हम अभ्यस्त हो चुके हैं, उन पाप-व्यसनो को भी निर्वासित कर देने की आज हम तुमसे याचना करते हैं।

हे भगवन् ! जैसे तुम अपनी रची भौतिक अग्नि द्वारा रात्रि में प्रकाश देते हो, वैसे ही हमारी मनोभूमि में व्याप्त महामोहमयी तमोगुण की गहरी काली निशा में हमें कर्तव्यबोध की ज्योति प्रदान कर हमारे लिए शिव होते हो । हे देव! तुमने जिसकी भी पुकार सुनी है, जिसको भी तुम सर्वात्मना प्राप्त हुए हो, उसक कल्याण ही हुआ है, वह विपदाओं से तर गया है । अतः हमारे मनोमन्दिर में पदार्पण कर हमारा भी कल्याण करो । हमारे समाज में आसीन होकर समाज का भी कल्याण करो।

-वेदमञ्जरी से

महर्षि दयानंद सरस्वती–१४

लेखकः श्री पंडित हरिश्चंद्र जी विद्यालंकार

(गत सितम्बर के अंक में आपने पढ़ा – महर्षि का तीसरी बार फर्रुखाबाद प्रवास, यज्ञोपवीत संस्कार की धूम, हमारा शुक्र अस्त नहीं होता, भोजन कब भ्रष्ट होता है, विभिन्न शास्त्रार्थों का विवरण और कुछ मनोरंजक घटनाओं के साथ ही श्रृंगीरामपुर, कन्नौज आदि का संक्षिप्त वृत्तांत। इस अंक में पढ़ें महर्षि द्वारा बतायी आठगप्पों और आठ सत्यों के बारे में, हलधर ओझा और लक्ष्मण शास्त्री से कानपुर शास्त्रार्थ यहॉ तक महर्षि की विचारधारा और अभ्यास के साथ ही कुछ मनोरंजक प्रसंग–संपादक)

अध्याय ६–संगठन से पूर्व
(संवत्१९२४ से संवत १९३० तक)
कानपुर का शास्त्रार्थ

गप्पा बाबा की धूमः कन्नौज में केवल सात आठ दिन ठहर कर बिठूर और मदारीपुर होते हुए महाराज कानपुर पधारे। यह वर्षाकाल था। भैरों मंदिर के समीप बा0 दरगाहीलाल वकील के घाट पर अपने आसन जमाया। उनके पधारते ही नगर में हलचल मच गई। दर्शनार्थियों का तांता लग गया। वहॉ मूर्तिपूजा के संबंध में प्रश्नोत्तर हुए। कुछ दिन पश्चात् संस्कृत में एक विज्ञापन छपवाया जिसमें निम्न आठ गपों और आठ सत्यों का उल्लेख था। यह विज्ञापन आषाढ़ संवत् १९२६ (२० जुलाई सन १९६९) के लगभग प्रकाशित हुआ इसका उल्लेख २७ जुलाई सन १९६९ के शोले–ए–तूर में मिलता है।

आठ गप्प

१. सब मनुष्यत ग्रंथ ब्रह्मवैवर्तादि पुराण
२. देवताबुद्धि से पाषाण आदि की पूजा
३. शैव, शाक्त.गाणपत्य आदि संप्रदाय
४. तंत्र ग्रंथोक्तवाममार्ग
५. भांग आदिमादक द्रव्यों का सेवन
६. पर स्त्री गमन
७. चोरी
8 छल–कपट और अभिमान–मिथ्याचरण

आठ सत्य

१. ईश्वरकृत ऋग्वेदादि चार वेद और ऋषीकृत दूसरे १७ ग्रंथ।
२. ब्रह्मचर्याश्रम में रहकर गुरु की सेवा और स्वधर्मानुष्ठान पूर्वक वेदों का अध्ययन।

३. वेदोक्तवर्णाश्रम में स्वधर्म अनुकूल संध्या–वंदनादि अग्निहोत्रादि करना।

४. पंच महायज्ञ का अनुष्ठान, ऋतुकाल में अपनी स्त्री से सहवास, श्रुति, स्मृति, सदाचार के अनुकूल आचरण।

५. शम, दम, तप चरण यमादि से लेकर समाधि तक उपासना, सत्संगपूर्वक वानप्रस्थाश्रम का अनुष्ठान।

६. विचार, विवेक वैराग्य और परा विद्या का अभ्यास और सन्यास ग्रहण करके सब कर्मों के फल की इच्छा का त्याग।

७. ज्ञान और विज्ञान से सब प्रकार के अनर्थ, मरण, जन्म, हर्ष, शोक, काम, क्रोध, लोभ, मोह, संग दोष के त्यागने का अनुष्ठान।

८. अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश, तमस्, राजस्व सत्व सब क्लेशों की निवृति, पंचमहाभूतों से अतीत होकर मोक्ष के स्वरूप और स्वराज की प्राप्ति।

उक्त आठ गप्पों के कारण महाराज का नाम यहाँ गप्पा बाबा पड़ गया था। जब कोई उनके सम्मुख कोई ऐसी बात कहता जो उनकी दृष्टि से इन आठों गप्पों के अंतर्गत होती तो वह कह उठते 'एतदपि गप्पमस्ति।'

शास्त्रार्थ का सूत्रपातः कानपुर की विशेष घटना पंडित हालदार ओझा और लक्ष्मण शास्त्री से महाराज का मूर्ति पूजा विषयक शास्त्रार्थ है। इस शास्त्रार्थ का प्रेरक कारण ब्रह्मानंद सरस्वती नमक सन्यासी हुआ। इसने महाराज को नास्तिक इसाई बताया और कहा कि अंग्रेजों ने ईसाई बनाने के लिए नियत किया है। वह महर्षि के पास आने वालों को अशुद्ध कहकर उनके प्रायश्चित्त की बात कहने लगा। पंचगव्य मिला और यज्ञोपवीत बदलवाकर कई एक का प्रायश्चित करवा भी दिया। परंतु रामचरण अवस्थी ने प्रायश्चित करने से इनकार कर दिया।

कानपुर के प्रसिद्ध रईस गुरुप्रसाद और पंडित प्रयाग नारायण ने बहुत सा रुपया लगाकर कैलाश और बैकुंठ नाम के मंदिर बनवाए थे। महर्षि ने उनसे कहा कि आप लोगों ने रुपया व्यर्थ कर दिया। इससे अच्छा यह होता कि आप कान्यकुब्ज कन्याओं का–जो तीस तीस वर्ष से कुँवारी बैठी है–विवाह कर देते या कोई कला–कौशल का कारखाना खोलत, जिससे देश और जाति का भला होता। पाठक! देखिए!! क्रांतिदृष्टा महर्षि की दूरदृष्टि किस प्रकार समाज व देश के सुधार की उन योजनाओं पर जाती थी जिनको आज भी हम पूर्ण रूप से नहीं कर पाए हैं!!!

इस प्रकार ब्रह्मानंद सन्यासी पंडित गुरुप्रसाद और पंडित प्रयाग नारायण इस त्रिगुट ने जो महर्षि से जले हुए थे, कानपुर में उनसे शास्त्रार्थ रचाने की व्यवस्था आरंभ की। पंडित हालधर ओझा और लक्ष्मण शास्त्री को उन्होंने इस शुभ कार्य के लिए तैयार किया। महर्षि तो इसके लिए तैयार थे ही! हलधर ओझा की इच्छानुसार संस्कृतज्ञ

असिस्टेंट कलेक्टर थेन साहब से मध्यस्थ बनने की प्रार्थना की गई जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। यह शास्त्रार्थ महर्षि के निवास स्थान दरगाहीलाल के घाट पर ही हुआ। शास्त्रार्थ के अवसर पर बाबू क्षेत्र नाथ घोष सबजज, बाबू काशीनारायण मुंशी, सुल्तान मोहम्मद कोतवाल आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। कई अंग्रेज भी श्रोता थे। ३१ जुलाई सन १८६९ के इस शास्त्रार्थ में बीस पच्चीस सहस्त्र की भीड़ एकत्र थी। स्थानाभाव से छतों और पेड़ों तक पर लोग बैठे थे।

इस शास्त्रार्थ का विवरण पंडित घासीराम जी ने निम्न शब्दों में लिखा है: –

हलधर ओझा से दूसरा शास्त्रार्थ

हलधरः आपने जो अष्ट गप्पम् और अष्ट सत्यम् का विज्ञापन दिया है उसमें व्याकरण की अशुद्धि है!

महर्षिःयह बातें पाठशाला के विद्यार्थियों की है। ऐसे शास्त्रार्थ पाठशाला में हुआ करते हैं। आज इस विषय पर कहो जिसके लिए सहस्त्र मनुष्य इकट्ठे हुए हैं। व्याकरण के विषय में कल मेरे पास आना। मैं समझा दूंगा।

इसके पश्चात हलधर ने ग्रंथ प्रमाण की बात उठाई और पूछा: –

हलधरः आप महाभारत को मानते हैं

महर्षिः हॉ।

हलधर–(श्लोक पढ़कर) एक नीच कुलोत्पन्न पुरुष (भील) ने द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की और शस्त्रों का अभ्यास किया। उससे यह फल मिला कि वह शस्त्रविद्या में निपुण हो गया। अतः मूर्ति पूजा विहित सिद्ध होती है।

महर्षिः इससे मूर्तिपूजा सिद्ध नहीं होती। यह कार्य प्रयोग शूद्र ने अज्ञानवश किया था। जैसा कि अज्ञानी लोग आजकल करते हैं और शस्त्र प्रयोग में निपुणता मूर्तिपूजा का नहीं, वरन् उसके निरंतर अभ्यास का फल था। आप तो वेद वाक्य दिखावें जिसमें मूर्ति पूजा की आज्ञा हो। जैसे देखो अंग्रेज चांदमारी करते हैं, परंतु यह किसी की मूर्ति सामने नहीं रखते।

कुछ देर चुप रहने के पश्चात **ओझा** ने पूछा–वेद में प्रतिमा पूजन की यदि आज्ञा नहीं है तो निषेध भी कहॉ है?

महर्षिःजब विधि नहीं है तो निषेध ही समझना चाहिए। यदि कोई मनुष्य अपने भृत्य से पश्चिम की ओर जाने का कहे तो यह ही समझ जाएगा कि वह पूर्वादि दिशाओं में जाने का निषेध करता है।

तत्पश्चात वेदों के अनेक मंत्र उद्धृत करके महाराज ने सिद्ध कर दिया कि ईश्वर निराकार है और उसकी मूर्ति नहीं हो सकती।

लक्ष्मणः ईश्वर सर्वव्यापक है। पत्थर में भी है! फिर मूर्तिपूजन में क्यादोष है?

महर्षिः जब ईश्वर सर्वव्यापक है तो पत्थर में ही क्या विशेषता है और चेतन को छोड़कर

जड़ की पूजा में क्या भलाई है?

इसे सुनकर पंडित हालधर और लक्ष्मण शास्त्री ने मौन धारण कर लिया। तत्पश्चात थेन साहब ने महर्षि से पूछा कि आप किसको मानते हैं महर्षि ने उत्तर दिया कि मैं केवल एक परमेश्वर को मानताहूँ।

थेनः तो फिर आप अग्नि में होम करके अग्नि की पूजा क्यों करते हैं?

महर्षिः हम अग्नि की पूजा नहीं करते। अग्नि सर्वव्यापक है। जो पदार्थ अग्नि में डाला जाता है वह सूक्ष्म होकर फैल जाता है।

इसके पश्चात थेन साहब ने अपनी छड़ी उठाई और कुर्सी से उठ खड़े हुए। उनके उठने के साथ ही सब लोग उठ खड़े हुए और शास्त्रार्थ समाप्त हो गया। हालधर के साथी गंगा जी की जय बोलते हुए और यह कहते हुए कि 'हलधर जीत गए' उन्होंनेउन्हें गाड़ी में सवार कर कर शास्त्रार्थ स्थल से चले गए।

पं0 गुरुप्रसाद ने इस शास्त्रार्थ के परिणाम पर किस प्रकार असत्य का पर्दा डालना चाहा– इसका विवरण भी हम पंडित घासीरामजी लिखित विवरण से नीचे उद्धृत कर रहे हैं

उन दिनों कानपुर में एक उर्दू समाचार पत्र प्रकाशित हुआ करता था जिसका नाम शोल–ए–तूर था। शुक़्ला जी उसके संपादकके पास गए जो उनका किराएदार भी था और उससे कहा कि कल के शास्त्रार्थ का वृतांत छापो और उसमें लिखो कि शास्त्रार्थ में हालधर ओझा जीते और दयानंद हारे!

संपादक ने कहाः शास्त्रार्थ में उच्च राज्य कर्मचारी उपस्थित थे। मैं ऐसी मिथ्या बात कैसे प्रकाशित कर दूँ? कल को कोई दावा हो गया तो क्या होगा? शुक्ला जी ने पूछा दावे में क्या होगा? संपादक ने उत्तर दिया कि जुर्माना होगा! शुक्ला जी ने कहा कि क्यों डरते हो? दस हजार तक जुर्माना मैं दे दूंगा।

अंतःकथा यह है कि भोल–ए–तूरके संपादक ने शुक्ला जी के आग्रह पर जैसा वह चाहते थे वैसा ही प्रकाशित कर दिया। (शोल–ए–तूर जिल्द १० नंबर ३१)

महर्षि के भक्त पंडित शिवसहायजी, जिन्हें महाराज अपना पक्ष लेने में किसी से ना डरने के कारण शूरवीर कहा करते थे, शोल–ए–तूरके उस अंक को लेकर महाराज की सेवा में उपस्थित हुए और उन्हें वह लेख पढ़ कर सुनाया। उन पर उसका क्या प्रभाव होना था! उन्होंने उत्तर दिया कि हम तो इस विषय में कुछ करेंगे नहीं। यदि आप लोग कुछ करना चाहें तो करें । परंतु ऐसा ना होकि हमें अदालत में आना पड़े। शिवसहाय ने कहा हम ही कुछ करेंगे!

पंडित शिवसहाय पंडित हृदयनारायण दत्तात्रेय वकील को साथ लेकर मुंशी साहब के बंगले पर गए और उनसे प्रार्थना की कि आप शास्त्रार्थ में मध्यस्थ थे! आपकी जो सम्मति हो वह कृपा करके आप लिख दीजिए! इस पर देन साहब ने अपनी सम्मति इस प्रकार लिखकर उन्हें दे दीः –

मध्यस्थ का निश्चय

भद्र पुरुषों! उस समय मैंने दयानंद सरस्वती फकीर के पक्ष में अपना निर्णय दिया था और मुझे विश्वास है कि उनकी युक्तियॉ वेद के अनुकूल भी थीं। मेरे विचार से उनकी विजय हुई। यदि आप कहेंगे तो मैं अपना निर्णय के कारण थोड़े दिनों में आपको बतला दूंगा। हस्ताक्षर– आपका आज्ञानुवर्ती डब्ल्यू थेन

Gentleman! At the time in question I decided in favour of Dayanand Saraswati Fakir and believe his arguments are in accordance with Vedas. I think he won the day!if you wish it, I will give you my reasons for my decision in a few days. Cownpore 7-8-1869

Your obediently W. Thaine

जादू वह जो सर चढ़े—कानपुर के शास्त्रार्थ में पंडित हालधर ओझा की हार का दूसरा अकाट्य प्रमाण शोल–ए–तूरके ३ अगस्त १८६९ के अंक में प्रकाशित वह विज्ञापन है जो हालधर ओझा के हस्ताक्षरों सहित संस्कृत, उर्दू और हिंदी में प्रकाशित हुआ था। इस विज्ञापन का हिंदी अंश निम्न प्रकार थाः–

मूर्तियॉ फैंको नहीं, मंदिर में पहुँचा दो

"जो कि दयानंद सरस्वती के मुताबिक बहुत लोग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वगैरा अपना कुल धर्म छोड़कर मूर्ति देवताओंको गंगा जी में प्रवाह कर देते हैं, यह बात बेजा व नामुनासिब है। इसलिए यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि जो लोग उनके मत को अख्तियार करें उनको चाहिए कि मूर्तियों को बराय मेहरबानी एक मंदिर कैलाशजी जो महाराज गुरुप्रसाद शुक्ल का है उसमें या मंदिर महाराज प्रयाग नारायण तिवारी में पहुँचा दिया करें और अगर उनको पहुँचाने की गुंजाइश न हो तो इत्तिला करें, हम उनको उठा लिया करेंगे और उनको बहाने वह फैंकने में जो पाप है वह संस्कृत में लिखा है। फक्त

दस्तखत– ओझा हलधर

विचारधारा व अभ्यास

कानपुर में महाराज लगभग तीन मास तक विराजमान रहे। इस समय में उनकी विचारधारा के कुछ अंश इस प्रकारहैः –

१.उनकी इच्छा थी की महाभारत आदि आर्षग्रथों को प्रक्षिप्त अंश से रहित विशुद्ध संस्कृत के रूप में प्रकाशित किया जाए।

२. बालविवाह और बाल सहवास का घोर विरोध करते थे। वह कहा करते थे कि परिणत् वयस् से पहले विवाह और स्त्री सहवास करने से संतान कभी बलिष्ठ नहीं होती। इस संबंध में वे अपना उदाहरण उपस्थित कर कहा करते थे कि उनके जन्म के समय उनके पिता की आयु ४०–४२ के लगभग थी।

३. देवेंद्र बाबू के अनुसार विधवा, संभवत बाल विधवा के विवाह (नियोग) का भी वे समर्थन करते और कहते थे कि विधवा का मृतपति के भाई (देवर) से पुनर्विवाह हो जाना

चाहिए।

४. शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम को आवश्यक बतलाते थे।

५. गायत्री जाप और प्राणायाम की महिमा बखानते थे। वह कहते थे कि अब भी ऐसे योगी विद्यमान है जो पृथ्वी से एक हाथ ऊपर उठकर वहाँ ही स्थिर रह सकते हैं।

६. वेदगान का उन्हें अभ्यास था। पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या इन दिनों एक अध्यापक के साथ कानपुर आए थे। एक दिन वे संध्या समय भ्रमण करते गंगा तट की ओर निकल गए। यहाँ उन्होंने देखा कि महाराज घाट के एक बुर्ज पर ऑखें आधी बंद किए हुए सामगान कर रहे हैं।

इसी समय कुछ लोगों ने लाठी और ढेलों से महाराज पर आक्रमण किया। महर्षि ने आक्रमणकारी की लाठी पड़कर उसे गंगा में धकेल दिया। पास के वृक्ष से शाखा तोड़कर आक्रमणकारियों को ललकारा और कहा मैं निरा साधु ही नहीं हूँ।

७. इसके पश्चात वे गंगा में तैरने लगे। महाराज तैरने में बड़े निपुण थे। कहते थे कि मालकंगिनी के तेल से के सेवन से जल में देर तक रहा जा सकता है।

८. **समाधिस्थ अवस्था में**:यहाँ पंडित हृदयनारायण वकील व पंडित काशीनाथ मुंसिफ दोनों कश्मीरी ब्राह्मण थे और महर्षि के समीप बहुधा आया करते थे। इन दिनों महर्षि एक ही समय भोजन करते थे और बहुधा यह भोजन पंडित हृदयनारायण के घर से ही आता था। एक रात को जब यह लोग महर्षि के स्थान पर गए तो इन्होंने देखा आप नहा धोकर सारे शरीर पर मिट्टी लगा ध्यानावस्थित हुए बैठे हैं। उनके शरीर में कोई कंपन अथवा अंग का संचालन नहीं देखा था। १५ मिनट तक इस स्थिति में रहने के पश्चात उनका ध्यान भंग हुआ। वह ऐसी मधुर और सरल संस्कृत बोलते थे कि उनके संसर्ग में रहने वाला संस्कृत से अनभिज्ञ अपढ़ भी उसे समझने लगता था।

कुछ मनोरंजक घटनाएँ: – इस प्रवास में घटी अनेक मनोरंजक घटनाएँ महर्षि के संबंध में प्रसिद्ध हैं। इनमें से कुछ यहाँ उद्धृत की गई हैं: –

१. अहिंसा प्रतिष्ठा:– एक दिन गंगा में लेटे थे कि मगर निकला। पं0 हृदयनारायण के लघु भ्राता ने देखा तो महाराज को सावधान किया। महाराज निर्द्वद्वभाव से बोले 'जब हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ते तो वह भी हमें दुख नहीं देगा'। पंडित काशीराम जी का लेख है कि यह घटना तथा कठिन शीत ताप में भी सुख सुविधा पूर्वक विचरण करना उनके योगी होने के प्रमाण है।

२. प्रतिवादी हतप्रभ: एक दिन कुछ पंडित षड्विंश ब्राह्मण का प्रमाण लेकर शास्त्रार्थ करने आए। महर्षि ने कहा–षड्विंश ब्राह्मण ही लाए होंगे। वे विचारे ऐसे हतप्रभ हुए कि अंगोछे में से पुस्तक ही नहीं निकल सके।

३. भैरव की मूर्ति के संबंध में प्रसिद्ध था कि उसकी सवारी को रोकने के अपराध पर सरकारी मैगजीन के एक पहरेदार सिपाही को भैरव ने दे मारा। सुनकर महर्षि ने कहा 'तंद्रा

में गिर पड़ा होगा!हम तो रोज भैरव का खंडन करते हैं!' कुछ दिन पश्चात यह मूर्ति गंगा प्रवाह में मंदिर का कुछ भाग गिर जाने से बह गई।

४. गाली के बदले मिष्ठान्नः महर्षि के डेरे के पास एक गंगापुत्र (पंडा) रहता था। वह नियम पूर्वक महाराज को गालियॉ सुनाया करता था। महाराज कुछ ध्यान न देते थे। इधर भेंट में चढ़े मिष्ठान्न फल आदि को महाराज आगंतुकों में ही बॉट देते थे। एक दिन गंगापुत्र सामने पड़ गया। उसे बुलाया और मिष्ठान्न आदि उसे भी दिया। वह प्रतिदिन आने लगा। अब उसे अनुभव हुआ कि ऐसे दयालु महात्मा को गालियॉ देकर मैं कैसा पापी बना हूँ! उसने महाराज से क्षमा मांगी।

महर्षि की विनोद–प्रियता : गंभीर तर्क वितर्क का धनी दयानंद विनोद प्रिय भी खूब था और यह विनोद व्यंग्य की सीमा में भी पहुँच जाता था। ऐसा ना हो तो ऐसे महात्माओं को अपना जीवन कितना नीरस और शुष्क प्रतीक हो! इस संबंध में कुछ घटनाओं का वर्णन इस प्रकार है : –

१. ऊँट का चाराः शिवलिंग पर बिल्व चढ़ने वाले ब्राह्मणों से कहा 'किसी ऊंट को खिलाते तो उसका चारा होता! पाषाण पर चढ़ाने से क्या लाभ हुआ?'

२. पाप मेरा पुण्य तेराः महर्षि के उपदेश से एक सिपाही ने अपनी मूर्ति गंगा में फेंक दी और माला तोड़ डाली। इसके बाद उसने पूछा–'यदि पाप हुआ तो? 'महाराज हॅसते हुए बोले–'इसमें जो पाप होगा वह मुझे होगा और पुण्य होगा वह तुझे।'

३. यह यह नरमांस भक्षण ही तो हैः चक्रांकितों के संबंध में कहा करते थे– 'अपना लिंग शतवार देखते हैं, तो भी इनकी 'श्री' नहीं शर्माती! पर पाषाण का लिंग देखते ही शर्मा जाती है।' 'जिस छाप से शरीर को दग्ध करते हैं, उसको धोकर पीना नरमांस खाना ही तो है।'

४. गुठलियों से मुक्तिःरुद्राक्ष को देखकर कहते – 'गुठलियों को पहनने से कैसी मुक्ति? मुक्ति तो तत्व ज्ञान से होती है!'

५. राज्य में क्यों आएः–स्वामी कैलाश पर्वत का कानपुर आगमन जान उन्हें प्रेमपूर्वक बुलवाया तो उन्होंने कहलवाया–'हम शूद्र के स्थान पर नहीं आएंगे!' महर्षि ने पूछवाया– 'तो म्लेच्छ के राज्य में ही क्यों आए?'

६. टका धर्मः–आधुनिक जन्म के परंतु गुणलक्षण हीन ब्राह्मणों के संबंध में स्वामी जी कहा करते थे–

टका धर्मष्टका कर्मटकाहि परमं पदम्।
यस्य गृहे टका नास्ति हा टका टकटकायते।।

तीन मास पश्चात एक दिन प्रातःकाल बिना किसी को सूचना दिए दूसरा लंगोट तक डेरे पर ही छोड़ महाराज आगे बढ़ गए।

ओ३म

धर्म सुधा सार

छठवींकथाः –समाज की व्यवस्था

(श्री पं0 गंगाप्रसाद उपाध्याय)

(मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त स्वनामधन्य विद्वान् श्री पंडित गंगाप्रसादजी उपाध्याय वैदिक दर्शन और आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर है। आपने **'धर्म–सुधार–सार'** नाम से दस कथाएँ संग्रहित करके कला प्रेस प्रयाग से वर्ष १९५४ में प्रकाशित करवायी थी। ये कथाएँ बहुत ही सारगर्भित और जटिल दार्शनिक सिद्धांतों को बहुत ही सुगम और सरस भाषा में हृदयंगम करवाने वाली है। –स0)

आज कथा का छठा दिन है। स्वामी जी की कथा बड़ी रोचक और ज्ञानवर्धक होती है, इसलिए लोगों के हृदय में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा उत्पन्न हो गई है। वे बड़े ध्यान से सुनते हैं और उस पर मनन करते हैं। आज स्वामी जी समाज की व्यवस्था के बारे में उपदेश देने वाले हैं। जनता में बड़ा उत्साह है। स्वामी जी के साथ सब ने यह भजन गायाः–

भजन

जाति को जीवन दो भगवान!
आशा का अंकुर उपज दो, परहित का पियूष पिला दो।
सेवा का सन्मार्ग सूझा दो, साहस का सोपान।।
जाति को जीवन दो भगवान!
प्रेम एकता का वर वर दो, ज्ञान उजाला घर–घर कर दो
कूट–कूट हृदय में भर दो, स्वाभिमान सम्मान।।
जाति को जीवन दो भगवान!
दलितों के अधिकार दिला दो, बिछुड़ों को फिर गले लगा दो।
भेदभाव का भूत भगा दो, हों सब लोग सामान।।
जाति को जीवन दो भगवान!
विधवा दल के संकट तारों, गो–कुल के कुल क्लेश निवारो।
बलहीनो में बल संचारों, निर्भय करो निदान।।
जाति को जीवन दो भगवान!
देशभक्ति की ज्योति जगा दो, धर्म–धाम का द्वार दिखा दो।

कर्मवीर बनना बतला दो, कर दयालुता दान।।
जाति को जीवन दो भगवान!

स्वामी जी:–मनुष्य एक सामाजिक जीव है वह अकेला नहीं रहता। हजारों मनुष्य साथ–साथ गॉव और नगरों में रहते हैं। शेर के समान किसी जंगल की मांद में रहकर उनका गुजारा नहीं होता। इसलिए समाज का विधान बनाने की जरूरत पड़ती है।

वैदिक ऋषियों ने समाज का एक सुंदर विधान बनाया था। उससे अच्छा विधान अब तक किसी ने सोच कर नहीं निकाला।

इस विधान का नाम है वर्णाश्रम धर्म। वर्ण चार हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र।

पहले उच्चतम वर्ण का नाम ब्राह्मण है। वे लोग जो अच्छे स्वभाव के और विद्याप्रिय हों, उनको यह काम सौंपा गया कि वह दूसरों को पढ़ाएँ, देश और जाति की ज्ञानवृद्धि करें, उनको उपदेश करें और ऐसी विचार तरंगों को देश में उत्पन्न न होने देवें जिससे जाति या देश का भविष्य खतरे में हो जाए। ब्राह्मण वह है जो विद्या पढ़े, पढ़ावे, त्यागी तपस्वी हो, ईश्वर का भक्त हो और ईश्वर के सिवाय किसी से ना डरे। दूसरे वर्णों का कर्तव्य है कि ब्राह्मण को दक्षिणा दें और उनको कष्ट में ना रहने दे। परंतु, ब्राह्मण का भी कर्तव्य है कि लोभी और लालची ना हो।

दूसरा वर्ण है क्षत्रिय। जो बलवान है और दूसरों की रक्षा कर सकते हैं उनका वर्ण है क्षत्रिय। क्षत्रिय का यह नाम इसलिए पड़ा कि वह चोर, डाकू और अत्याचारियों को दंड देकर क्षत (**"क्षत्किल त्रायत इत्युदाग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेपी रूढ़ः**"–कालिदास का रघुवंश सर्ग २ श्लोक ५३) अर्थात् क्षत्रिय कष्ट से लोगों की रक्षा करता है। देश का शासन प्रबंध क्षत्रियों के हाथ में दिया जाता है। क्षत्रियों में ये गुण होने चाहिए

१. शारीरिक बल हो।
२. विषयी और लंपट ना हो।
३. भय ना करें।
४. दूसरों को व्यर्थ भयभीत न करें।
५. लालची ना हो।
६. रक्षा करने के लिए सदा उद्यत रहे।
७. गरीबों को ना सताएँ।
८. देश के नियमों का पालन करें। ना अधर्म पर चले ना दूसरों को अधर्म पर चलने दें।

तीसरा वर्ण है वैश्य वर्ण। वैश्य का कर्तव्य है कि सब प्रकार से देश और जाति के धन की समृद्धि में सहायक हो और पूरा–पूरा उद्योग करें। खेती करना, व्यापार, कला,

कौशल, अच्छी–अच्छी चीज बनाना और उनका देश देशांतर में पहुँचना–यह सब वैश्य का काम है। लौहार, बढ़ई, सुनार, थवई, इंजीनियर कुम्हार, जुलाहे, कारीगर–ये सब वैश्य वर्ण के लोग हैं, क्योंकि इसे धन की संवृद्धि होती है

वैश्यों के लिए सबसे बड़ा काम यह है कि देश का कोई भाग भूखों ना मरे। ब्रह्मचारियों वानप्रस्थियों और संन्यासियों को दान द्वारा खाना पहुँचाया जाए। अन्य गृहस्थों को व्यापार और क्रय विक्रय द्वारा खाना पहुँचाया जाए। जिन देशों में खाना कम होता है वहाँ उन देशों से खाना लाया जाए जहाँ खेती अधिक अच्छी होती है। जहाँ खेती अच्छी नहीं हो सकती और लोहे, कोयले आदि की खाने हैं वहाँ के लोगों में कला कौशल की उन्नति करना वैश्यों का काम है। मजदूरी करने वाले लोगों की रोजी का प्रबंध भी वैश्यों का कर्तव्य है। जो निर्धन हैं और थोड़े से धन से व्यापार कर सकते हैं, उनको थोड़ी सी ब्याज पर रुपया देकर व्यापार में लगाना भी वैश्यों का काम है।

परंतु वैश्यों को धन कमाने के साथ धन का लोभी नहीं बनना चाहिए। जो धन कमावे, उसको व्यसनों में ना उड़ावें। दूसरों को दान देवें और ऐसा व्यापार ना करें जिससे दूसरों की रोजी मारी जाए और वह दरिद्र हो जाए।

चौथा वर्ण शूद्र वर्ण है। शूद्र वे लोग है जो बुद्धिके बहुत ही मंद है। उनकी स्वयं कुछ करने की योग्यता नहीं। वे दूसरों के इशारों पर काम कर सकते हैं। इनका कर्तव्य है कि वह ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के कामों में मदद देवें। खोटे कर्म न करें! ना किसी को धोखा देवें। अपने शारीरिक परिश्रम से मजदूरी कमावे!

ये हुए चार वर्ण! परंतु यह नहीं समझना चाहिए कि वर्णों से तात्पर्य हिंदूजाति की वर्तमान जाति बिरादरियों से है। यह जात बिरादरियाँ वर्ण नहीं है, अपितु वर्णों का उल्टा है। जात बिरादरियाँ रोटी बेटी का भेदभाव रखती है और जन्म पर निर्भर हैं। आजकल ब्राह्मण का लड़का ब्राह्मण ही कहलाता है चाहे वह मूर्ख और दुराचारी ही क्यों ना हो! और चमार का लड़का चमार ही रहता है चाहे वह विद्वान और धर्मात्मा ही क्यों ना हो! इस जन्म परक जात बिरादरी ने देश में अज्ञान, द्वेष, भेदभाव और मिथ्याभिमान बढ़ा दिया है। और हिंदू जाति असंगठित होकर ह्रास को प्राप्त हो गई है। योग्य प्राचीन ब्राह्मण कुलों के लड़के नालायक होकर भी ब्राह्मण कहलाने और विद्यावृद्धि में रोड़ा अटकाते हैं। प्राचीन वीर क्षत्रिय वंश की अयोग्य संतान क्षत्रिय कहलाते हैंऔर इनसे किसी की रक्षा नहीं होती। कई वैश्य जातियाँ जैसे कुम्हार, जुलाहे भूद्र गिने जाते हैं और लोग उनको ना छूते हैं ना उनको पढ़कर तरक्की करने देते हैं। इस प्रकार अंधेर नगरी चौपट राज हो रहा है।

शिवदत्तः मेरी समझ में आ गया कि वर्ण व्यवस्था का निर्माण क्यों हुआ था! पर समाज में छूत और अछूत के भाव कैसे उत्पन्न हो गए?

स्वामीजीः जब जाति का पतन आरंभ हुआ तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई। समाज का संगठन बिगड़ गया। हर वर्ण वाले अपने को उच्च और दूसरों को नीचे समझने लगे। इस प्रकार अनेक जाति उपजातियॉ उत्पन्न हो गईं समाज को बलिष्ठ बनाने के लिए जो एकता आवश्यक थी, वह नष्ट हो गई।वर्ण व्यवस्था भी अब गुण कर्म स्वभाव अनुसार नहीं रह गई थी। वह जन्म के अनुसार मानी जाने लगी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ण वाले शुद्र वर्ण वालों से द्वेष करने लगे। उनको समाज से बाहर निकाल दिया गया। उनकी अलग बस्तियॉ बन गईं। उनके कुएँ अलग बने। हिंदुओं के मंदिर में उनका घुसने की आज्ञा न थी। वे वेदों को मानने वाले थे। वैदिक धर्मी थे! पर हिंदू समाज में उनका कोई स्थान नहीं था! इसप्रकार आपस में द्वेश के भाव जागे!एक दूसरे को अलग समझने लगे!यह अवस्था इतनी बढ़ी कि दक्षिण भारत में तो अछूत के मुख को देखना भी पाप समझा जाने लगा। बेचारे अछूतों को यह भी आज्ञा न थी कि वे सड़कों पर निकल सकते।

ज्ञानचंद्रः इतना अन्याय! हा देव!

स्वामी जीःहॉ! इन बिचारों के साथ ऐसा अन्याय किया गया। कुत्ते बिल्लियों को गोद में लेना बुरी बात नहीं समझी जाती थी। परंतु इन अछूतों के साथ पशु से भी बुरा व्यवहार होने लगा। ऋषि दयानंद ने सबसे पहले लोगों को बताया कि ऐसा व्यवहार उचित नहीं। समाज को बलवान बनाने के लिए उनकी भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी उच्च वर्ण की!फिर वर्ण व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए!

रामचंद्रः धन्य है ऋषि दयानंद! आर्यसमाज ने इस संबंध में क्या किया?

स्वामीजीः आर्यसमाज ने उनका प्रवेश आर्य समाज के मंदिरों में कराया। इस पर समाज में बड़ी हलचल मची। लोगों ने आर्यों का विरोध किया। पर ऋषि के भक्त डटे रहे। अछूतों को यज्ञोपवीत दिए गए। वेदमंत्र सिखाए गए। उनको शिक्षा देने के लिए अछूतों की पाठशालाएं खोली गईं। अछूतों में नशे की बुरी लत थी। यह आदत छुड़ाने की कोशिश की गई। इस सब कार्य में उच्च वर्ण वालों ने बड़ी बधाएँ डाली! पर आर्य डटे रहे!!

राम पदार्थः आर्यसमाज ने यह बड़ी प्रशंसा का काम किया!पर कांग्रेसी कहते हैं कि महात्मा गांधी ने उनका उद्धार किया!

स्वामीजीः महात्मा गांधी से पचास वर्ष पहले आर्यसमाज नें यह काम आरंभ किया था। महात्मा गांधी ने राजनीतिक कारणों से इसमें सहायता दी। अंग्रेजों की चाल थी कि हरिजनों को हिंदुओं से अलग कर दिया जाए!महात्मा गांधी ने इसको रोकने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी!इस प्रकार हरिजन हिंदू जाति के भाग बने रहे!यह महात्मा गांधी की बहुत बड़ी सेवा थी! महात्मा गांधी ने आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाया।

ज्ञानचंद्रः इतना होने पर भी लोग अब भी उनसे घृणा करते हैं!

स्वामीजीः यह सब धींगा धींगी है। अब तो भारत स्वतंत्र हो गया है इसके राजनियम के अनुसार हम किसी को अछूत नहीं कह सकते। अछूतों को पूरा अधिकार है कि वह रेलगाड़ी में बैठे, होटल, बाजार, स्कूल, सभा, मंदिर में घुस जाएं! कोई उच्च वर्णवाला यह नहीं कह सकता कि आप दूर हटिए! जो ऐसा करेगा उसको राज नियम के अनुसार दंड दिया जाएगा।

शिवदत्तः समाज में धार्मिक स्वतंत्रता होनी चाहिए या नहीं?

स्वामीजीः हर समाज में पूरी धार्मिक स्वतंत्रता होनी चाहिए। आज हम बैठे हुए धर्म के सिद्धांतों पर निर्भीकता से विचार कर रहे हैं। यह सब भी स्वामी दयानंद की कृपा का फल है। स्वामीजी से पूर्व धार्मिक सिद्धांतों पर विचार करने की स्वतंत्रता न थी। जो बताया गया, चुपचाप मान लिया। जो पुस्तकों में पढ़ा उसे पर आंख बंद करके विश्वास कर लिया!'क्यों? और कैसे?' कहा नहीं कि पाप लग गया। ऋषि दयानंद ने हमें सिखाया कि ऑख बंद करके किसी बात को ना मानो! उसे पर विचार करो! युक्ति दो!! यदि विचार और युक्ति से तुम्हारी समझ में आ जाए तो मान लो! नहीं तो ठुकरा दो!!!

शिवदत्तः सच्चाई वही है जो कसौटी पर कसी जा सके!

स्वामीजी : हॉ!यही बात है! स्वामी दयानंद ने व्याख्यान दिए। उन्होंने सनातनी हिंदू, मुसलमान और ईसाइयों से शास्त्रार्थ किया।इस प्रकार जनता में धर्म के विषय में बड़ी जागृति हुई। बहुत से हिंदू अपने धर्म को छोड़कर लोगों के बहकाने में ईसाई और मुसलमान हो जाते थे। आर्यसमाज ने इस बढ़ती लहर को त्याग तपस्या और बलिदानों के द्वारा रोका। आर्यसमाज ने लोगों को बतलाया कि जिस प्रकार एक हिंदू अपना धर्म बदलकर ईसाई या मुसलमान हो सकता है, इसी प्रकार यदि मुसलमान या इसाई वेदों पर ईमान लावे तो वह हिंदू या वैदिक धर्मी हो सकता है। यह एक नई बात थी।1000 वर्ष से हिंदू समाज ने अपने लालों को ठुकरा कर विधर्मियों के हाथों में अर्पित कर दिया था। यदि किसी हिंदू ने गलती से किसी मुसलमान का जूठा पानी या खाना खा लिया तो वह धर्म भ्रष्ट हो गया! उसका हिंदू समाज में कोई स्थान नहीं! इस प्रकार लाखों की संख्या में हिंदू मुसलमान हो गए थे। पर आर्य समाज ने हिंदुओं को मुसलमान और ईसाई होने से न केवल रोका ही, पर उसके साथ–साथ उनको शुद्ध भी किया।

मुसलमान लोग इस बात से बहुत चिढ़ गए। उन्होंने सोचा कि आर्यसमाजी कहने सुनने से ना मानेंगे, इसलिए इनको डंडे के जोर से शांत करना चाहिए। धर्मवीर पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता थे। मुसलमानों से शास्त्रार्थ किया करते थे। वे मुसलमान को शुद्ध करते थे। एक धर्मांध मुसलमान शुद्ध होने के बहाने ६ मार्च १८९७ ई0 को आया। वह कंबल के अंदर कटार छिपा कर ले गया था। पंडित जी उसकी मदद